INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान देने वाली गुमनाम स्त्रियाँ

(Unknown Women who contributed to the National Independence Movement)

डॉ. मनोज कुमार सिंह,
असिस्टंट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय,
सिंगरामऊ, जौनपुर,
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (उत्तर प्रदेश, भारत)

बिजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
शोधछात्र,
राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय,
सिंगरामऊ, जौनपुर,
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (उत्तर प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/06.2025-35292157/IRJHIS2506012

प्राक्कथन :

15 अगस्त 1947 भारत आजाद हुआ एक निरंतर लंबे संघर्ष, असंख्य वीर देशभक्तों की स्वतंत्रता की बलि देवी पर जीवन आहुति देने के बाद। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन की लड़ाई केवल पुरूषों की हिस्सेदारी से फतह नहीं की गई बल्कि इस महायज्ञ में स्त्रियों का भी योगदान रहा है, उनके योगदान को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। बहुत सी साहसी स्त्रियों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ आवाज उठाई। अंग्रेजों के विरूद्ध पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश की स्त्रियों ने जो किसी की माँ थी, बेटी थी, पत्नी, बहन थी, ने अपना कर्तव्य निभाया। कई स्त्रियाँ सड़कों पर उतरी, जुलूसों का नेतृत्व किया व्याख्यान और प्रदर्शनों में शरीक हुई। अनेक स्त्रियाँ लाठियाँ, गोलियाँ और पुलिस के बूटों की ठोकरें खाते हुए भी हँसते-हँसते सीना तानकर आगे बढ़ते हुए वीरता और साहस तथा नेतृत्व क्षमता का अभूतपूर्वपरिचय दिया।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्त्रियों के महान योगदान के बावजूद वे स्थानीय स्तर पर खो कर रह गयी उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पहचान न मिल सकी। इतिहास लेखन में आम जनता का इतिहास लिखा जा रहा है। स्वतंत्रता से वर्तमान तक वे महिलाएँ जो देश के लिए कुछ किया उनकी उपलब्धियाँ गुमनाम सी रही। अब उन पर खुलकर इतिहास लेखन हो रहा है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान देने वाली स्त्रियाँ इस प्रकार हैं -

बेगम हजरत महल :

सीधे तौर पर सर्वप्रथम स्वतंत्रता की जंग लड़ने वाली स्त्रियों में बेगम हजरत महल का नाम आता है। इनका मूल नाम मुहम्मदी खानुम था। नवाब के नजर बंद होने के बाद बेगम ने अपने अल्पवयस्क पुत्र बिरजिस कादिर को नवाब घोषित किया। मार्च 1858 में लखनऊ पर पुनः अंग्रेजों का अधिकार हो गया। अतः हजरत महल आत्मसमर्पण करने से इंकार कर नेपाल चली गयीं। जहाँ उनकी गुमनामी में मृत्यु हो गई।

बी. अम्मा :

इनका असली नाम आबदी बानों बेगम था। ये भारत की पहली मुस्लिम महिला स्वतंत्रता सेनानी मानी जाती हैं। इन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं को एकजुट किया। पुत्र शौकत अली और मुहम्मद अली के ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार करने पर इस बुजुर्गमाता ने पूरी जिंदगी पर्दे से गुजारने के बाद जरूरत के वक्त खिलाफत और असहयोग में भाग लिया। पंजाब की एक सभा में बुरखा उठाते हुए 'अपने बच्चे' कहकर संबोधित करते हुए कहा- "माँ को **अपने बच्चों** के सामने पर्दे की जरूरत नहीं होती।" बी अम्मा 1901 में इलाहाबाद के कांग्रेस अधिवेशन अखिल भारतीय महिला का अध्यक्ष चुना गया। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता की प्रतीक थीं।

अजीजन बाई :

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान देने वाले गुमनाम नायिकों में अजीजन बाई जैसी योद्धा की जिक्र किया था। अजीजन एक तवायफ वीरंगना थीं। अजीजन का मूल नाम अंजुलाथा। कानपुर में अजीजन बाई के कोठे में क्रांतिकारियों की बैठक होती थी। उनमें नाना साहब, तात्या टोपे, शमसुद्दीन आदि भाग लेते थे। नाना साहब से प्रभावित होकर अजीजन ने अपनी सारी सम्पत्ति देश की खातिर नाना साहब को दान कर दिया। अजीजन बाई के कोठे पर ब्रिटिश सैनिकों का भी आना-जाना लगा रहता था अतः इन सैनिकों से गुप्त बातें, राज की बातें निकलवाकर क्रांतिकारियों को बताती थीं।

जद्दनबाई :

बनारस की प्रसिद्ध गली दाल मण्डी कोठे पर भी आजादी के दिवानों का आना-जाना लगा रहता था। यहाँ पर मशहूर अभिनेत्री नरगिस दत्त की माँ जद्दनबाई रहती थीं। महफिल से मिलने वाले पैसे को ये क्रांतिकारियों को दे देती थीं।

रानी झलकारी बाई :

1857 के विद्रोह में सिर्फ पुरूष ही नहीं बल्कि स्त्रियाँ भी शामिल थीं। इन्हीं गुमनाम वीरंगना स्त्रियों में एक सुनहरा नाम झलकारी बाई का भी है। कवि मैथिलीशरण गुप्त ने इनके बारे में लिखा है- "जा कर रण में ललकारी थी, वह झाँसी की झलकारी थीं।" रानी लक्ष्मी बाई को किले से सुरक्षित निकालने के बाद इन्होंने अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया। इनकी शक्ल लक्ष्मी बाई से मिलने के कारण दूसरी लक्ष्मी बाई कहा जाता था।

उदा देवी पासी :

ये अवध के नवाम वाजिद अली शाह के महिला दस्ते की सदस्या थीं। 1857 के गदर में रानी उदा देवी ने 32 अंग्रेज सैनिकों मार गिराया था, अंत में लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्ति हुई। उदा देवी का संदर्भ अमृत लाल नागर की पुस्तक 'गदर के फूल' में मिलता है।

रसूलन बाई :

फुलगेंदवा न मारो, लगत करेजवा में चोट..... गीत गाने वाली रसूलन बाई स्वदेशी आंदोलन से प्रभावित होकर गहने आदि न पहनने का प्रण लिया। देश आजाद होने पर इन्हें संगीत नाट्य अकादमी से सम्मानित किया गया।

सुभद्रा कुमारी चौहान :

"खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थीं।" कविता लिखकर देश प्रेम की भावना का संचार करने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान ने असहयोग आंदोलन में गाँधी के आह्वान पर सक्रिय रूप से जन सेवा, राष्ट्र सेवा मे जुट गई। असहयोग आंदोलने में भाग लेने वाली पहली कवयित्री स्त्री थीं तथा असहयोग आंदोलन, 1940, 1942 में कई बार जेल

भी गईं **'वीरो का कैसा हो वसंत'** आदि कविताओं के माध्यम से लोगों में देश के लिए कुछ कर गुजरने के लिए उत्साहित करती रही। जाहिर है कि वह एक राष्ट्रवादी कवयित्री ही नहीं एक देशभक्त महिला भी थीं।

गौहर खान :

स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करने में एक अन्य गुमनाम स्त्री थी, वह थी तवायफ गौहर खान जिन्होंने स्वराज कोष में सक्रिय रूप से अपने पैसे दान दे दिए। कांग्रेस के एक सत्र में गौहर खान ने भाग लिया था। ये अलग बात है कि स्त्रियों ने उन्हें सभा से बाहर रखा।

दुर्गा भाभी :

दुर्गा भाभी भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में क्रांतिकारियों की प्रमुख सहयोगी थी। वे सुविख्यात क्रांतिकारी भगवतीचरण वोहरा की धर्मपत्नी थीं। राष्ट्रीय आंदोलन में कुछ प्रमुख स्त्रियों ने यदि आमरण अनशन, जुलूस, धरने पर बैठती थीं तो कुछ स्त्रियाँ गोला, बारूद, तमंचे आदि का भी प्रयोग करने में हिचकिचाती नहीं थी उन्हीं में से एक दुर्गा भाभी थीं। सभी क्रांतिकारियों ने उनसे किसी न किसी रूप में सहयोग प्राप्त किया। 09 अक्टूबर 1930 को दुर्गा भाभी ने गवर्नर हैली पर गोली चलाई किन्तु वह बच निकला जिससे अंग्रेज पुलिस हाथ धोकर उनके पीछे पड़ गई।

1885 में कांग्रेस की स्थापना के समय ही इसमें कई स्त्रियाँ सक्रिय रही। उदाहरण के लिए 1890 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में कादम्बिनी गांगुली भारत की पहली महिला जिन्होनें संबोधित किया। स्वर्ण कुमारी घोष, नलिनी सेनगुप्त ने भी कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया था। जो इस बात का सूचक था कि भारतीय स्त्रियों की अतीत में जो भी उपलब्धियाँ थी वह बीच में लुप्त हो जाने के बाद एक बार पुनः उजागर होने लगी थी। असहयोग आंदोलन (1920-22) प्रारम्भ होने पर स्त्रियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। बंगाल के कांग्रेस नेता चितरंजन दास की पत्नी बसंती देवी उनकी बहन उर्मिला देवी और भतीजी सुनीति देवी ने दिसम्बर में कलकत्ता की सड़कों पर खुलेआम प्रदर्शन में भाग लिया और गिरफ्तारियाँ देकर देश को स्तब्ध कर दिया।

बारदोली के आंदोलन में स्त्रियों में जबरदस्त जोश था। बारदोली आंदोलन में पटेल के पहुँचने पर वहाँ की स्त्रियों ने उन्हे 'सरदार' की उपाधि से विभूषित किया। महिलाओं को जागरूक करने के लिए जिन स्त्रियों को काम पर लगाया गया उनमें बम्बई की पारसी महिला **मीठूबेन पेटिट**, **भक्तिबा** (दरबार गोपालदास की पत्नी) मनीवेन (सरदार पटेल की पुत्री) **शारदावेन शाह** और **शारदा मेहता** के नाम विशेष उल्लेखनीय है।

ललिता घोष नामक स्त्री ने साइमन कमीशन के विरोध में एक रैली का आयोजन किया। उन्होंने सुभाषचन्द्र बोस की सलाह पर एक स्वंयसवक दल तैयार किया था।

भारत के क्रांतिकारी आंदोलन में भी स्त्रियाँ पीछे नहीं रही। **श्रीमती सुशीला देवी**, **श्रीमती प्रेमा देवी** और **प्रकाशवती कपूर** क्रांतिकारी आंदोलन की बड़ी भारी कार्य कत्रिया थी। मास्टर सूर्यसेन के नेतृत्व में कल्पना दास एवं प्रीती लता वाडेकर ने क्रातिकारी आंदोलने में जमकर सहयोग दिया। दिसंबर 1931 में मिल्ला की दो स्कूल छात्राओं शांति घोष और सुनीति चौधरी वहाँ के जिलाधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी। अपने विद्रोही स्वभाव को साकार रूप देते हुए बीना दास ने फरवरी 1932 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उपाधि धारण करते समय बंगाल के गवर्नर को गोली मार दी। **लीलानाग** नामक महिला ने दीपावली संघ की स्थापना की थी जिसमें स्त्रियों को शस्त्र चलाने और बम बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता था अन्य आंदोलनों की अपेक्षा भारत छोड़ो आंदोलन में आम जनता की भागीदारी कुछ ज्यादा ही बढ़ गई। स्त्रियों ने पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलकर राष्ट्रभक्ति एवं जागरूकता का परिचय दिया उदाहरण के लिए अरूणा आसफ अली एवं सुचेता कृपलानी भूमिगत आंदोलन की संगठनकर्ता थी तो उषा मेहता भूमिगत रेडियों का

सचालन करती थी। बंगाल के मिदनापुर जिले के तामलुक स्त्री 74 वर्षीय किसान मांगिनी हाजरा ने गोली लग जाने के बादे भी राष्ट्रीय झण्डे को ऊँचा रखा। कलकत्ता की प्रतिमा देवी, मिदनापुर की शशिबाला गोली का शिकार हुई सुहासिनी गांगुली को कड़ी सजा झेलनी पड़ी। बी.ए. की छात्रा रही कांति शर्मा, चंद्रलेखा आदि को सामान्य कैदी की श्रेणी में रखा गया। 2 सितम्बर 1942 को असम की कलकत्ता बरूआ महज 17 साल की उम्र में थाने पर तिरंगा फहराने की कोशिश में पुलिस की गोली का शिकार हुई उठने बाद झण्डा रत्नप्रभा ने लिया वह झण्डा लेकर आगे बढ़ रही थी, सामने से गोलियों को आते देख उसके हाथ कांपने लगे तब उसकी दादी योगेश्वरी झण्डा लेकर आगे बढ़ी और गोली खाकर ढ़ेर हो गई। इन स्त्रियों ने अपने वीरता, त्याग एवं देश प्रेम का परिचय देते हुए अपना जीवन देश को अर्पित कर दिया।

गैडिनल्यू :

सविनय अवज्ञा आंदोलन के जोर पकड़ने पर पूर्वोत्तर क्षेत्र के मणिपुर में आंदोलन की बागडोर में गैडिनल्यू के संभाली, इन्हें गिरफ्तार कर आजीवन कारावास की सजा दी गई। पं. जवाहर लाल नेहरू ने इन्हें रानी की उपाधि देते हुए कहा था "एक दिन आएगा जब भारत इन्हें स्नेहपूर्वक स्मरण करेगा"।

बेलामित्र :

बेलामित्र सुभाषचन्द्र बोस के बड़े भाई सुरेश चंद्र बोस की छोटी बेटी थी। अपने गहने बेचकर बेला ने आजाद हिंद फौज के लिए अस्त्र-शस्त्र की व्यवस्था की। उड़ीसा के कोणार्क मंदिर के पास आजाद हिंद फौज के लोगो के गुप्त रूप से रहने की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी भी इन्हें मिली। हाल ही में भारतीय रेलवे ने पहली बार पश्चिम बंगाल में बेलानगर रेवले स्टेशन का नाम बेला मित्र के नाम पर रखा है।

उपर्युक्त नाम के अलावा गंगुबाई हंगल, हुस्नाबाई, विद्याधरी बाई आदि मुस्लिम तवायफों ने भी जरूरत के वक्त राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयेग दिया।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में अन्य स्त्रियों के नाम इस प्रकार हैं जो किसी न किसी प्रकार से योगदान दिया दुर्गा भाई देशमुख, कमला देवी चट्टोपाध्याय, राजकुमारी अमृत कौर, विजयलक्ष्मी पंडित, कमला नेहरू (जवाहर लाल नेहरू की पत्नी) इंदिरा गाँधी, सुमति मोरारजी, बेगम साफिया, अब्दुल वाजिद, लक्ष्मी सहगल, रेहना तैयब जी, सरला देवी चौधरानी (1910 में भारत स्त्री मंडल संगठन बनाया) दुबरी सुबासम, चारू शीला देवी, नानी बाला देवी, प्रकाशपति पाल, अवंतिका बाई लोधी, अनुसईया बाई काले, मनु गाँधी, सुशीला नैयन, राजकुमारी गुप्ता, पार्वती गिरि।

निष्कर्ष :

आज सारी दुनिया में स्त्री की पहचान की जरूरत है। स्त्री की अस्मिता को केंद्र में लाने का श्रेय महिला आंदोलन को जाता है। महिला आंदोलन के संघर्षों और कुर्बानियों का ही नतीजा है कि स्त्रियाँ आज गर्व के साथ अपने हक की लड़ाई लड़ रही है। एक जमाना था स्त्रियाँ खामोश थी। आज स्त्री ने चुप्पी तोड़ने का बीड़ा उठा लिया है। स्त्री अस्मिता के संघर्ष को प्रभावी बनाने के लिए जरूरी है कि स्त्रियाँ बोले लिखे और एक मनुष्य और स्त्री के रूप में अपनी स्थिति जाने, उसे बदले और नए विकल्प का निर्माण करें। इसके लिए इतिहास बोध जरूरी है। ये वही स्त्रियाँ हैं जिन्होंने जाति, वर्ग, समाज, धर्म, परिवार, निजी जीवन आदि सभी बंधनों को दरकिनार करते हुए भारत माँ की आजादी का रास्ता चुना और पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर ब्रिटिश शासन को नष्ट किया। गाँधी जी ने कहा था "भारत की आजादी हमारी माँओ-बहनों के सहयोग के बगैर यह संघर्ष संभव नहीं था। " आज भारत जब आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है ऐसे में हमारे राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान देने वाली स्त्रियों, नायिकाओं के संघर्ष, उनके आदर्श विचारों को जीवंत बनाए रखना ही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. शुक्ला, राम लखन, (2008), 'आधुनिक भारत का इतिहास' (स्वतंत्रता प्राप्ति और देश विभाजन तक) हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय।
2. चंद्र विपिन, (2009)' 'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष', हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय।
3. बंद्योपाध्याय शेखर (2016), 'पलासी से विभाजन तक और उसके बाद : आधुनिक भारत का इतिहास', सेटियरे ब्लैकस्वान नई दिल्ली।
4. ग्रोवर, वी. एल. यशपाल (2008) 'आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन।
5. मिश्रा, विवेक (2022) 'आजादी @75 'क्रांतिकारियों की शौर्यगाथा', प्रभात पब्लिकेशन नई दिल्ली।
6. हिन्दुस्तान- 29 नवम्बर 2014
7. आजकल - अक्टूबर 2015
8. आजकल - अक्टूबर 2022
9. दैनिक जागरण - 18 सितम्बर 2022
10. अमर उजाला - 29 सितम्बर 2022